Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10(I)| October- 2025

Original Article

आर्थिक विकास,खुशहाली एवं मानव कल्याण

श्री विकास वर्मा
शोधार्थी-अर्थशास्त्र अध्ययनशाला
सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय-उज्जैन
Email: vikasheco.verma@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171009
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 10(I)
Pp. 48-51
October 2025
Submitted: 12 Sept. 2025
Revised: 22 Sept. 2025
Accepted: 06 Oct. 2025
Published: 31 Oct. 2025

गोषवारा :-

खुशहाली एक भावनात्मक एवं मानसिक अवस्था है,जो सकारात्मक एवं आनंददायक भावना से युक्त होती है। दर्शनशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में खुशी को अच्छे जीवन या समर्द्ध जीवन के रूप में व्याख्या की गई है। खुशी अर्थशास्त्र के अंतर्गत आर्थिक मानकों के साथ-साथ जन सामान्य के सुख स्तर को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए ।खुश व्यक्ति अधिक स्वस्थ,दीर्घायु और उच्च जीवन गुणवत्ता वाले होते हैं,जो कि अपनी आंतरिक क्षमताओं का उपयोग कर स्वयं का एवं समाज के कल्याण में वृद्धि करते हैं। कल्याण का अर्थ ख़ुशी स्वस्थ और समर्द्ध जीवन ही है।विश्व के प्रत्येक राष्ट्र अधिकतम आर्थिक विकास को प्राप्त करना है ।सामान्यतः किसी देश के निवासियों के प्रति व्यक्ति आय एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि को आर्थिक विकास का मुख्य सूचक माना जाता है ।देश में सकल राष्ट्रीय उत्पाद एवं सकल घरेलू उत्पाद की दर में वृद्धि होना आर्थिक प्रगति है । राष्ट्र की समृद्धि का आकलन केवल सकलघरेलू उत्पादन एवं सकल राष्ट्रीय उत्पादन के द्वारा ही किया जाता। इसके लिए दूसरा सबसे महत्वपूर्ण कारण मानव खुशहाली का होना अत्यंत आवश्यक है ।प्राचीन काल में धन को ही अर्थशास्त्र माना जाता था, किंतु अब अर्थशास्त्र को आर्थिक खुशहाली के रूप में स्वीकारा जाता है ।धन या संपत्ति में निरंतर वृद्धि होने से देश में समृद्धि नहीं आ सकती है। किसी देश में धन या सकल घरेलू उत्पाद की दर में निरंतर वृद्धि को मानव विकास के साथ नहीं जोड़ा जा सकता है।उस देश के निवासियों में खुशी के स्तर में वृद्धि को वास्तविक मानव विकास की संज्ञा दी जाती है ।मानव खुशहाली का संबंध देश के निवासियों का आर्थिक प्रगति के अतिरिक्त सामाजिक, बुद्धिक एवं सांस्कृतिक प्रगति से है। उपरोक्त अध्ययन का मुख्य उदेश्य मानव खुशहाली एवं मानव कल्याण के मध्य संबंधो का विश्लेषण करना है। दर्शंशात्रियो एवं धर्मशास्त्रियो के अनुसार खुशहाली का अर्थ-"एक अच्छा जीवन जीने की स्थिति" है| इस अध्ययन में आर्थिक विकास पर खुशहाली की प्रभावशीलता,खुशहाली एवं मानव कल्याण के बिच अंतर्संबंध का विवेचन किया गया है|अधिकतमिकरण का सिद्धांत और सुख जैसे विचार कई वर्षों से आर्थिक सिद्धांतों के केंद्र में रहे हैं ।खुशहाली का विचार एक नवीन प्रतिमान के रूप में प्रकट हुआ है,जो की सामाजिक,आर्थिक एवं पर्यावरणीय प्रणालियों को इस प्रकार संरचित करता है,कि वह एक सतत पर्यावरण में मानव कल्याण को प्रोत्साहित करें ।आर्थिक विकास मात्र खुशहाली की ग्यारंटी नही देता बल्कि सामाजिक समानता,स्वास्थ्य ,शिक्षा,पर्यावरण एवं सुशासन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है|

की वर्ड- आर्थिक विकास, खुशी अर्थशास्त्र, सकल राष्ट्रीय उत्पाद, आर्थिक खुशहाली, मानव खुशहाली एवं मानव कल्याण ।

प्रस्तावना-

विश्व के प्रत्येक राष्ट्र अधिकतम आर्थिक विकास को प्राप्त करना है|चाहे विकसित राष्ट्र हो अथवा विकासशील राष्ट्र सभी आय एवं रोजगार के स्तर में सतत वृद्धि करने का प्रयत्न करतेहैं।विगत कुछ वर्षों से इस ओर अधिकतम प्रयास किए जा रहे हैं ।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
श्री विकास वर्मा ,शोधार्थी-अर्थशास्त्र अध्ययनशाला, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय-उज्जैन

How to cite this article:
विकास वर्मा,(2025). आर्थिक विकास,खुशहाली एवं मानव कल्याण, Journal of Research & Development, 17(10(I)), 48-51

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10(I)| October- 2025

सामान्यतः किसी देश के निवासियों के प्रति व्यक्ति आय एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि को आर्थिक विकास का मुख्य सूचक माना जाता है। देश में सकल राष्ट्रीय उत्पाद एवं सकल घरेलू उत्पाद कीदर में वृद्धि होना आर्थिक प्रगति है।विकसित देशों में पूंजी निर्माण की मजबूत स्थिति के कारण औद्योगिकरण का क्षेत्र स्वत: ही मजबूत हो जाता है राष्ट्र की समृद्धि का आकलन केवल सकलघरेलू उत्पादन एवं सकल राष्ट्रीय उत्पादन के द्वारा ही किया जाता। इसके लिए दूसरा सबसेमहत्वपूर्ण कारण मानव खुशहाली का होना अत्यंत आवश्यक है ।प्राचीन काल में धन को हीअर्थशास्त्र माना जाता था, किंतु वर्तमान परिपेक्ष में अर्थशास्त्र की परिभाषा में भी परिवर्तन हो गयाहै। अब अर्थशास्त्र को आर्थिक खुशहाली के रूप में स्वीकारा जाता है।धन या संपत्ति में निरंतरवृद्धिहोने से देश में समृद्धि नहीं आ सकती है। किसी देश में धन या सकल घरेलू उत्पाद की दरमें निरंतर वृद्धि को मानव विकास के साथ नहीं जोड़ा जा सकता है।उस देश के निवासियों में खुशी के स्तर में वृद्धि को वास्तविक मानव विकास की संज्ञा दी जाती है।मानव खुशहाली का संबंध देश के निवासियों का आर्थिक प्रगति के अतिरिक्त सामाजिक, बुद्धिक एवं सांस्कृतिक प्रगति से है।संसार के समस्त प्राणियों में मनुष्य सृष्टि की अनुपम रचना है।मनुष्य को विवेक उपहार में मिला है।मानव सभी प्राणियों में श्रेष्टतम प्राणी माना जाता है।मनुष्य सुख शांति और दुखों का स्वयं जिम्मेदार है। मनुष्य ने ज्ञान-विज्ञान के दम पर जीवन को सरल बना है,जीवन जीने के तरीके बदले हैं। भौतिक सेवाएं अपने श्रेष्टतम पर है।मनुष्य ने तकनीकी उपकरणों से शारीरिक और मानसिक श्रम को बहुत कम कर लिया है,फिर भी सुख,शांति,संपन्नता और सुकून की तलाश में पूरी दुनिया में भटक रहा है।हमारे जीवन में खुशी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।खुशी एक ऐसी चीज है जिससे लोग को ढूंढना चाहते हैं,फिर भी खुशी की परिभाषा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति से भिन्न हो सकती है।आमतौर पर खुशी एक भावनात्मक स्थिति है,जो खुशी,संतुष्टि,संतोष,तृप्ति की भावनाओं की विशेषता है।मनोवैज्ञानिक और अन्य सामाजिक वैज्ञानिक आमतौर पर इस भावना तक इस प्रति के बारे में बात करते समय व्यक्तिपरक कल्याण शब्द का उपयोग करते हैं।मानव कल्याण एक समग्र अवधारणा है,जो शारीरिक,स्वास्थ्य,मानसिक संतुलन,सामाजिक जुड़ाव,आर्थिक स्थिरता और पर्यावरण सुरक्षा आदि का सामंजस्य है।यह सभी पहलू आपस में विकसित होते हैंतभी व्यक्ति एवं समाज दोनों सच्चे अर्थों में खुशहाल एवं विकसित माने जाते हैं ।मानव कल्याण एवं खुशहाली जीवन के अविभाज्य पहलू है।मानव कल्याण व्यक्ति के संतुलित एवं सुरक्षित जीवन का संकेत है। वही खुशहाली उसके आंतरिक आनंद,सुख एवं संतोष का प्रतीक है।देश का वास्तविक आर्थिक विकास तभी होगा,जब आर्थिक प्रगति के साथ-साथ मानवीय मूल्य,सामाजिक संबंधों और मानसिक शांति को भी महत्व दिया जाएगा।अतः सुख और कल्याण वास्तविक अर्थ में केवल जीना नहीं बल्कि ऐसा जीवन जीना है जो उद्देश्यपूर्ण,शांतिपूर्ण और संतुष्ट हो।

मानव खुशहाली-खुशी एक प्रकार की प्रक्रिया है कि जिससे सामाजिक,आर्थिक एवं पर्यावरण आयामों को सुरक्षित किया जाता है जिससे सतत विकास की दिशा में मानव कल्याण को प्रोत्साहन मिले।वर्तमान में प्रत्येक राष्ट्र का अंतिम लक्ष्य अधिकतम आर्थिक विकास करना है,किंतु सभी देशों ने स्वीकार किया है कि वास्तविक आर्थिक विकास सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि लाना नहीं है। देश के नागरिकों में खुशी में वृद्धि होना ही आर्थिक विकास है।खुशी के संकेतों को विश्व अर्थव्यवस्था में निरंतर प्रयोग किया जा रहा है ।देश की सरकारी इन संकेतों के क्रियान्वयन के लिए अनेक प्रकार की योजनाएं बना रही है।सकल राष्ट्रीय खुशी विकास का एक प्रतिमान है जो व्यक्ति एवं समाज दोनों के लिए खुशी को अधिकतम करने का समग्र दृष्टिकोण है।मानव विकास उस मूल्य विकास के विचार से संबंधित है जिसका उद्देश्य मानव जीवन की समृद्धि से होता है ।खुशहाली केवल पल भर का आनंद ही नहीं बल्कि यह दीर्घकालीन संतोष और जीवन की सकारात्मक अनुभूति है।मानव खुशहाली को मापने के लिए प्रति व्यक्ति आय ,सामाजिक समर्थन,स्वस्थ जीवन प्रत्याशा ,स्वतन्त्रता,उदारता,भ्रष्टाचार का स्तर आदि कारको का उपयोग किया जाता है।यह दृष्टिकोण भावनात्मक स्थिरता और समाज में उसके संबंधों पर निर्भर करती है ।अरस्तु के अनुसार "खुशहाली कोई लक्ष्य नहीं बल्कि अच्छे कर्मों का परिणाम है" ।मनुष्य को जीवन जीने के लिए वायु,जल और भोजन की आवश्यकता होती है। स्वास्थ्य,सुखमय और लंबा जीवन जीने के लिए मनुष्य को प्रश्नता की भी आवश्यकता होती है।अप्रसन्न व्यक्ति ना तो पूरी तरह से स्वस्थ है और न ही वह मन से स्थिर।अप्रसन्न व्यक्ति घोरनिराशावादी होता है । अप्रसन्न व्यक्ति मानसिक रूप से समाज से जुड़ा हुआ महसूस नहीं कर पता है।प्रसन्नता प्रत्येक व्यक्तियों में सकारात्मक का बोध कराती है। प्रसन्नता मानव शक्ति और शांत सुख में जीवन की सक्रियता को बढ़ाने में सहायता करती है।खुशी एक ऐसा अनुभव है जिसे महसूस किया जाता है। खुशियां सभी की आकांक्षा होती है। यह कुशल राष्ट्रीय की वास्तविक सामाजिक प्रगति को प्रकट करता है ।धन की प्राप्ति ही खुशी का मापदंड नहीं है।देश में जीडीपी या जीएनपी में प्रगति को हम वास्तविक आर्थिक विकास नहीं मान सकते।प्राय देखा गया है कि एक और तो देश में प्रगति होती रहती है किंतु दूसरी ओर आयविषमताएं,गरीबी और निवासियों की खुशी के स्तर में कमी आती रहती है।1972 से पूर्व जीडीपी को ही आर्थिक समृद्धि का सूचक माना जाता था,किंतु अब परिवर्तन हो गया है।संयुक्त राष्ट्र की वैश्विक पहला सतत विकास समाधान नेटवर्क द्वारा जारी द वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट-2024 में 147 देश में भारत का स्थान 118 है जबकि पूर्व वर्ष में स्थान 126 था।रिपोर्ट में कहा गया है कि कई बड़े देशों की तरह भारत भी इस तथ्यों को स्वीकार करता है कि देश का जीडीपी बढ़ा लेने से ही खुशहाली समाज की स्थापना हो सकती है।मानव खुशी का अर्थ केवल धन भौतिक सुखसुविधाओ या भौतिक विकास तक सीमित नहीं होता,बल्कि इसमें एक व्यक्ति के शारीरिक,मानसिक,सामाजिक और आध्यात्मिक सभी पहलुओं की संतुलित और समग्र प्रगति शामिल होती है।जब कोई व्यक्ति अपने जीवन में संतोष,स्वास्थ्य,आत्मिक शांति,अच्छे संबंध और सामाजिक सुरक्षा अनुभव करता है तभी उसे सच्चा और खुशहाल कहा जा सकता है।

मानव कल्याण-मानव कल्याण वह अवधारणा है ,जिसमें व्यक्ति मानसिक,शारीरिक,सामाजिक,आध्यात्मिक रूप से संतुलित,संतुष्ट और सुरक्षित महसूस करता हैयह सकारात्मक विकास सुख एवं संतोष की स्थिति है।इसलिए तो कहा जाता है,कि स्वास्थ्य केवल रोगों से मुक्त नहीं बल्कि शारीरिक,मानसिक एवं सामाजिक रूप से पूर्ण कल्याण की स्थिति से है।मानव कल्याण के आयामो में शारीरिक कल्याण,मनोवैज्ञानिक कल्याण,सामाजिक कल्याण,आर्थिक कल्याण,पर्यावरण कल्याण,आध्यात्मिक कल्याण शामिल है।मानव कल्याण

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10(I)| October- 2025

समाज एवं राष्ट्र के समग्र विकास का आधार है।कल्याण सूचकांक जीडीपी से अधिक व्यापक मापदंड माना जाता है,क्योंकि यह केवल आर्थिक ही नहीं जबकि मानवीय विकास को दर्शाता है।कई वर्षों से खुशहाली को व्यक्तिगतक्षेत्र तक सीमित माना जाता गया था।जबकि सार्वजनिक प्रवृत्ति की वस्तुएं और सेवाएं समाज के सामाजिक क्षेत्र में लाई गई।समय के साथ-साथ इन वस्तुओं और सेवाओं ने सामूहिक सुख की अवधारणा को इस प्रकार प्रतिस्थापित करना प्रारंभ कर दिया है जैसे कि इसका अंतिम उद्देश्य यही है। न्याय की भाति सुख भी सार्वजनिक संपदा है ।यद्यपि इसे व्यक्ति अपनी अनुभूति के अनुसार आत्मगत रूप से अनुभव करता है।सुख आर्थिक रूप से सापेक्ष होता है।यह व्यक्ति के अपने अनुभव पर निर्भर करता है,जो वह दूसरों के साथ तथा अतीत के संदर्भ में करता है।हमारा दूसरों के साथ संबंध की गुणवत्ता और गहराई हमारी खुशहाली वास्तुओ के मात्र स्वामित्व की तुलना में कहीं अधिक प्रभावित करती है। इस प्रकार सुख केवल वस्तुओं के भौतिक उपभोग तक सीमित नहीं है,बल्कि यह भौतिक संपत्ति के आनंद सीमा से भी परे माना जाता है।इसी परिवर्तन के कारण मानव कल्याण में वृद्धि होती है।सभी आधुनिक कल्याणवादी अर्थशास्त्रियों ने सुख और कल्याण को एक केंद्रीय विषय के रूप में स्वीकार किया है।

मानव खुशहाली एवं मानव कल्याण में सम्बन्ध- मानव खुशी और आर्थिक विकास परस्पर जुड़े हुए है,वह आर्थिक विकास मानव कल्याण को बढ़ाता है,लेकिन मानव खुशहाली आर्थिक विकास से कही अधिक व्यापक है जिसमें शिक्षा.स्वास्थ्य.पर्यावरण और लोगों के विकल्पों पर ध्यान दिया जाता है।मानव कल्याण वह अवस्था है जिसमे व्यक्ति की मुलभुत आवश्यकताये-भोजन,वस्त्र,आवास,शिक्षा,स्वास्थ्यऔर सुरक्षा की पूर्ति की जाती है।अमर्त्य सेन के अनुसार क्षमता द्रष्टिकोणके अनुसार-कल्याण इस बात पर निर्भर करता है की व्यक्ति के पास अपने जीवन को सार्थक ढंग से जीने की कितनी स्वतंत्रता है। आर्थिक विकास का उद्देश्य लोगों को बेहतर जीवन जीने की आवश्यकता प्रदान करना है।न की केवल आय बढ़ाना।खुशी को मापने के लिए सकल राष्ट्र खुशहाली जैसे गैर आर्थिक मापदंडों का भी उपयोग किया जाता है ।आर्थिक विकास से जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि होती जैसे-गरीबों कम होना,शिक्षा बेहतर होना जिससे खुशहाली बढ़ सकती है। हालांकि यह संबंध हमेशा सीधा नहीं होता है ।एक निश्चित बिंदु के बाद केवल आर्थिक वृद्धि में खुशहाली में वृद्धि नहीं होती और स्टर्लिंग सिद्धांत बताते हैं कि अमीर देश में आर्थिक वृद्धि और खुशहाली के बीच एक हद तक वियोग हो सकता है।मानव कल्याण एवं मानव खुशी दोनों एक ही पहलू है जो की एक दूसरे के पूरक है।कल्याण खुशहाली का आधार है ,जब व्यक्ति में शारीरिक,मानसिक,सामाजिक रूप से संतुलन होता है तो वह सुखी रहता है।वही खुशी कल्याण का परिणाम है,जब व्यापक सकारात्मक नमो से भरा होता है,तो उसका स्वास्थ्य और जीवन स्तर बेहतर होता है।मानव कल्याण एवं खुशहाली के लिए संतुलित आहार,व्यायाम,मानसिक स्वास्थ्य,समाज में सहभागिता,पर्यावरण संरक्षण,आर्थिक समानता,सामाजिक न्याय,आध्यात्मिकता आदि होना आवश्यक है।मानव कल्याण एवं खुशहाली केवल व्यक्तिगत अनुभव नहीं जबकि सामाजिक एवं देश के विकास के आधारशिला है।जब व्यक्ति शारीरिक,मानसिक और सामाजिक रूप से संतुलित होता है,तभी समाज स्थाई रूप से विकसित होता है।प्रत्येक देश में मानव कल्याण एवं खुशहाली में वृद्धि के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।किंतु अनेक घटक ऐसे हैं जो मानव खुशहाली एवं मानव कल्याण में बाधा उत्पन्न करते हैं जिनमें-शिक्षा का स्तर,आय एवं रोजगार की अस्थिरता,सामाजिक सुरक्षा एवं असमानता,मानसिक एवं स्वास्थ्य सेवाओं का पिछड़ापन,सामुदायिक सहयोग एवं संबंध,सकारात्मक दृष्टिकोण एवं आत्म नियंत्रण,पर्यावरणीय संतुलन,सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यांकन आदि।भारत में मानव कल्याण एवं खुशहाली का व्यक्तिगत ना होकर सामूहिक संतुलन है ।भारतीय दर्शन में 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना प्राचीन काल से मानव कल्याण की सर्वोच्च अवधारणा रही है। मानव खुशहाली एवं मानव कल्याण में अनेक चुनोतिया भी है जिनमे-गरीबी एवं आय असमानता,बेरोजगारी एवं अस्थिर रोजगार,मानसिक स्वास्थ्य की उपेक्षा,पर्यावर्णीयअसंतुल,शहर-ग्रामीण विकास में असमानता आदि।

निष्कर्ष एवं नीतिगत सुझाव-देश में सकल राष्ट्रीय उत्पाद पर विशेष ध्यान की आवश्यकता नहीं है बल्कि शासन को जीडीपी में वृद्धि की अपेक्षा सकल राष्ट्रिय खुशहाली पर ध्यान देने की आवश्यकता है।देश के प्रत्येक नागरिकों को मूलभुत सुविधाए प्रदान कर उनको खुश रखना ही प्रजातांत्रिक व्यवस्था में सरकार का दायित्व होता है ।कई देशों में जीडीपी की दर तो कम होती है,किंतु भूटान जैसे देश में सकल राष्ट्रिय खुशहाली विकसित देशों की तुलना में सर्वाधिक है,यही वास्तविक आर्थिक विकास का सूचक है।सुख एवं कल्याण शारीरिक,मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य के सकारात्मक कार्यों का परिणाम है।मानव कल्याण व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को बताता है। खुशी इस गुणवत्ता का अनुभव है ।व्यक्ति का शारीरिक,मानसिक और सामाजिक संतुलन सही होता है,तभी अधिक खुशहाली होती है।खुशहाली से ही व्यक्ति के स्वास्थ्य,उत्पादकता और संबंधों को मजबूती मिलती है।वर्तमान में नीति निर्माता द्वारा खुशी की संकल्पना को शामिल करने की इसलिए आवश्यकता है क्योंकि आर्थिक विकास की दर में वृद्धि के बावजूद असमानता एवं मानसिक तनाव बढ़ रहे हैं।अब विकास को केवल आर्थिक ना मानकर मानवीय और नैतिक दृष्टिकोण से भी माप जाना आवश्यक है।सरकार के लिए आर्थिक समावेश,स्वास्थ्य सुविधाओं,गुणवत्तापूर्ण शिक्षा,स्वछता और जीवन गुणवत्ता सुधार हेतु अनेक योजनाएं प्रारंभ की गई,जिनमें मुख्यतः-सतत विकास लक्ष्य,प्रधानमंत्री जनधन योजना,आयुष्मान भारत योजना,राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 स्वच्छता मिशन आदि है।मानव कल्याण में वृधि हेतु शासन को शिक्षा सुविधाओ एवं मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए,साथ ही रोजगारोनमुखी योजनाओं को बढ़ावा देना चाहिए।समाज में समान अवसरों की नीति लागू की जाना जरूरी है ताकि सभी कोआर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रो में सामान अवसर मिल सके जिससे मानव कल्याण एवं खुशहाली में वृधि हो।

संदर्भ

1. *बस्टी स्टीवेंसन,जस्टिन"इकोनामिक ग्रोथ इन सब्जेक्टिव वेल बीइंग"-एस वर्किंग पेपर 14282-नेशनल ब्यूरो ऑफ़ इकोनॉमिक रिसर्च,कैंब्रिज,2018*
2. *गौतम,अनुदेश-"द कनफ्लुएंस ऑफ़ ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस एंड पॉलिसी नीड इन इंडिया-इंपीरियल जनरल ऑफ़ इंट्रडिसीप्लिनरी रिसर्च वॉल-3,इश्यू1,2017 पेज 1696-1699*

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10(I)| October- 2025

3. हर्ष,शाह & मिलिंद,रामानी-"स्पिरिचुअलिटी एंड हैप्पीनेस अमोंग यूथ ए कॉरिलेटिव स्टडीज"- इंटरनेशनल जनरल ऑफ़ टेक्निकल रिसर्च एंड एप्लीकेशन-वॉल्यूम 5,इश्यू 3 मई-जून 2017,पेज 43-46
4. जगदीश,गांधी पी-"ह्यूमन डेवलपमेंट इन इंडिया"-मोर ग्रे एरिमौज लेस ब्राइट स्पॉट्स- साउदर्न इकोनॉमिस्ट,वॉल्यूम-37 नंबर-12 अक्टूबर,1998 पेज31-33
5. खुदाबक्शी,अकबर-"रिलेशनशिप बिटवीन जीडीपी एंड ह्यूमन डेवलपमेंट इंडिसेज इन इंडिया",इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ट्रेड इकोनॉमिक्स एंड फाइनेंस'वॉल-2,नंबर 3,जून 2011,पेज 251-253
6. मिश्रा,धर आशीष एवं चौधरी,राहुल-"ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ ह्यूमन डेवलपमेंट इंडेक्स ऑफ़ सिलेक्टेड इंडियन स्टेट्स"-अभिनव नेशनल मंथली रिफर्ड जर्नल ऑफ़ रिसर्च-इन कॉमर्स एंड मैनेजमेंट,वॉल-13,फरवरी 2014,पेज 63-76
7. पूजा-"ट्रेड एंड पैटर्न ऑफ़ ह्यूमन डेवलपमेंट इन इंडेक्स इन नॉर्थ ईस्ट इंडिया" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट रिसर्च,वॉल 6 इश्यू 5 सितंबर-अक्टूबर 2016,पेज 243-246
8. शिव,कुमार-"ह्यूमन डेवलपमेंट इंडेक्स इन कैप्सूलेशन ऑफ़ इंडिकेटर वेल बीइंग ऑफ़ झारखंड-झारखंड जनरल ऑफ़ डेवलपमेंट इन मैनेजमेंट स्टडीज , रांची वॉल्यूम-16 नंबर,3 सितंबर 2018,पेज 7797-7811
9. सुंदरियाल,रुचि एवं कुमार,रविंद्र द-"हप्पिनेस एंड वेल बीइंग"-इंटरनेशनल जनरल ऑफ़ इंडियन साइकोलॉजी,वॉल-1 इश्यू 4,नं.4 जुलाई सितंबर 2014,पेज-19-24
10. वर्मा,सावंत कुमार-"इकोनामिक डेवलपमेंट एंड वूमेन हैप्पीनेस"- इंटरनेशनल रिसर्च जनरल ऑफ़ कॉमर्स आर्ट्स एंड साइंस,वॉल्यूम 7 इश्यू 3,2016,पेज 17 -21

https://ijip.in/wp-content/uploads/2024/08/18.01.121.20241203.pdf

https://ijcrt.org/papers/IJCRT2011071.pdf

https://www.researchgate.net/publication/344599701_Happiness_and_Wellbeing

https://www.ijmrhs.com/medical-research/examining-relationships-among-wellbeing-leisure-satisfaction-life-satisfaction-and-happiness.pdf

https://www.researchgate.net/publication/298791567_A_Critical_Analysis_of_Happiness_and_Well-Being_Where_we_Stand_Now_Where_we_Need_to_Go